



# जालौर जिले में भूमि उपयोग एवं फसल संरचना का विश्लेषण: प्रवृत्तियाँ और परिवर्तन (2001–2022)

**हड्मता राम**<sup>1</sup> शोधार्थी, अर्थशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत**Corresponding Author:** \*हड्मता राम**DOI:** <https://doi.org/10.5281/zenodo.18009922>**सारांश**

प्रस्तुत शोध आलेख में जालौर जिले में कृषि विकास की प्रवृत्तियों का व्यापक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह जानना है कि पिछले दो दशकों में जिले के भूमि उपयोग प्रतिरूप, फसल विविधता, उत्पादन, उत्पादकता एवं कृषि योग्य भूमि की दशा में किस प्रकार के परिवर्तन हुए हैं। इसके अंतर्गत मुख्यतः खाद्यान्न, दलहन, तिलहन एवं व्यावसायिक फसलों के आंकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिससे क्षेत्रीय कृषि की दिशा और दशा का मूल्यांकन किया जा सके। यह अध्ययन द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें सरकारी एवं विभिन्न वर्षों की कृषि रिपोर्टों का विश्लेषण किया गया है, जो न केवल जिले की कृषि संभावनाओं की पहचान करता है, बल्कि कृषि योजनाओं की प्रभावशीलता और आवश्यक हस्तक्षेप की ओर भी संकेत करता है। भूमि उपयोग की प्रवृत्तियाँ, परती भूमि की बढ़ती मात्रा और कुछ फसलों की घटती उत्पादकता जैसी समस्याएँ जिले की कृषि व्यवस्था के समक्ष गंभीर चुनौती के रूप में उभरती हैं।

**Manuscript Information**

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 12-12-2024
- Accepted: 28-02-2025
- Published: 05-03-2025
- IJCRM:4(SP1); 2025: 163-176
- ©2025, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

**How to Cite this Article**

हड्मता राम. जालौर जिले में भूमि उपयोग एवं फसल संरचना का विश्लेषण: प्रवृत्तियाँ और परिवर्तन (2001–2022). Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(6):163-176.

**Access this Article Online**[www.multiarticlesjournal.com](http://www.multiarticlesjournal.com)

**मुख्य शब्द:** जालौर जिला, कृषि विकास, भूमि उपयोग प्रतिरूप, फसल उत्पादन, उत्पादकता, परती भूमि, खाद्यान्न फसलें, दलहन फसलें, तिलहन फसलें, व्यावसायिक फसलें, कृषि सांचिकी, क्षेत्रीय कृषि योजना

## 1. प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ जनसंख्या का एक बड़ा भाग आज भी अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। कृषि न केवल देश की खाद्य सुरक्षा का आधार है, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ भी है। परंतु बीते कुछ दशकों में कृषि क्षेत्र में कई जटिलताएँ उभरी हैं, जैसे भूमि की घटती उत्पादकता, सिंचाई संसाधनों की कमी, जलवायु परिवर्तन, और किसानों की आर्थिक अस्थिरता। इन चुनौतियों का प्रभाव क्षेत्रीय स्तर पर भिन्न-भिन्न रूपों में परिलक्षित होता है।

राजस्थान राज्य की भौगोलिक विविधता और जलवायु की अनिश्चितता इसे कृषि विकास के लिए एक विशेष संदर्भ प्रदान करती है। राज्य का जालौर जिला, जो मुख्यतः अर्ध-शुष्क क्षेत्र में स्थित है, लंबे समय से कृषि गतिविधियों में संलग्न रहा है। यहाँ की कृषि प्रणाली मुख्यतः वर्षा पर निर्भर है, जिससे क्षेत्र की फसल संरचना एवं भूमि उपयोग प्रतिरूप जलवायु एवं संसाधन उपलब्धता के अनुसार समय-समय पर परिवर्तित होते रहे हैं।

पिछले दो दशकों (2001-2022) में जालौर जिले में भूमि उपयोग एवं फसल संरचना में अनेक उल्लेखनीय परिवर्तन देखे गए हैं। परती भूमि का बढ़ना, बंजर भूमि का स्थिर रहना, और शुद्ध बोये गए क्षेत्र में गिरावट इस ओर सकेत करते हैं कि कृषि भूमि पर दबाव बढ़ा है और भूमि का समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है। साथ ही, कुछ फसलों में उत्पादकता में गिरावट, तो कुछ में तीव्र वृद्धि, कृषि प्रणाली में आ रहे तकनीकी, पर्यावरणीय एवं बाजार-आधारित बदलावों को रेखांकित करते हैं।

उदाहरणस्वरूप, बाजरा जैसी पारंपरिक फसल का उत्पादन और उत्पादकता दोनों घटे हैं, जबकि सरसों एवं गेहूं जैसी फसलों ने बेहतर प्रदर्शन किया है। दलहन फसलों विशेष रूप से मूँग और मोठ की गिरती उत्पादकता पोषण सुरक्षा और मिट्टी की उर्वरता के लिए चुनौती

प्रस्तुत करती है। वहाँ दूसरी ओर, कपास, ग्वार और मिर्च जैसी नकदी फसलों का विस्तार यह दर्शाता है कि किसान अब बाजार-केन्द्रित खेती की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

इन परिवर्तनों की गहराई से पड़ताल करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है, ताकि यह समझा जा सके कि कृषि के क्षेत्र में कौन-से कारक सकारात्मक भूमिका निभा रहे हैं और किन कारणों से क्षेत्रीय कृषि संकटप्रस्त हो रही है।

## 2. भूमि उपयोग प्रतिरूप

जालौर जिले की भूमि उपयोग संरचना में वर्ष 2001 से 2021 तक अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए हैं। भूमि उपयोग प्रतिरूप से यह स्पष्ट होता है कि जिले की भूमि का किस प्रकार और किस उद्देश्य से प्रयोग हो रहा है- जैसे कृषि, वन, परती भूमि, बंजर भूमि, या गैर-कृषि गतिविधियों के लिए। यह प्रतिरूप प्राकृतिक, सामाजिक और आर्थिक कारकों से प्रभावित होता है।

वर्ष 2010-11 में जिले में कुल वन क्षेत्र 23,506 हेक्टेयर था, जो 2020-21 तक मामूली वृद्धि के साथ 23,634 हेक्टेयर तक पहुँच गया। इससे यह संकेत मिलता है कि जिले में वन आच्छादन लगभग स्थिर है। वहाँ, गैर-कृषि उपयोग के अंतर्गत आने वाली भूमि का क्षेत्र 2010-11 में 41,120 हेक्टेयर था, जो 2020-21 में बढ़कर 44,930 हेक्टेयर हो गया। इसका कारण शहरीकरण, औद्योगीकरण तथा सड़क, भवन आदि निर्माण कार्य हो सकता है।

बंजर भूमि का क्षेत्रफल भी लगभग स्थिर बना रहा है, 2010-11 में यह 81,217 हेक्टेयर था, जो 2020-21 में घटकर 78,159 हेक्टेयर हो गया। हालांकि इसमें कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ, परंतु यह संकेत देता है कि भूमि सुधार योजनाओं की पहुँच सीमित हो सकती है।

**तालिका 1:** जालौर जिले में भूमि उपयोग (2010-2021)

		वर्ष	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र		
			वन क्षेत्र	2010-11	2015-16
प्रतिवेदित क्षेत्र का वर्गीकरण	खेती के लिए अनुपलब्ध भूमि	गैर-कृषि उपयोग के अंतर्गत आने वाला क्षेत्र	41120	44725	44930
		बंजर और गैर-कृषि योग्य भूमि	81217	78105	78159
		कुल	122337	122830	123089
	परती भूमि को छोड़कर अन्य बंजर भूमि	स्थायी चारागाह और अन्य चारागाह भूमि	47405	47367	47360
		विविध वृक्ष फसलों और पेड़ों के अंतर्गत आने वाली भूमि जो शुद्ध बोये गए क्षेत्र में सम्मिलित नहीं हैं	1351	10	56
		कृषि योग्य बंजर भूमि	31867	21163	20539
		कुल	80623	68540	67955
	परती भूमि	वर्तमान परती भूमि के अलावा अन्य परती भूमि	72520	100676	104817
		वर्तमान परती भूमि	58281	91885	75184
		कुल	130801	192561	180001
शुद्ध बोया गया क्षेत्र			699335	649042	661932

स्रोत: <https://aps.dac.gov.in/LUS/Public/Reports.aspx>

परती भूमि की स्थिति विशेष ध्यान देने योग्य है। वर्तमान परती भूमि (जो एक वर्ष से कम समय के लिए परती रही हो) 2010-11 में 58,281 हेक्टेयर थी, जो 2015-16 में बढ़कर 91,885 हेक्टेयर हो गई,

और 2020-21 में घटकर 75,184 हेक्टेयर रह गई। इसी प्रकार अन्य परती भूमि (जो एक से पाँच वर्ष तक परती रही हो) 2010-11 में 72,520 हेक्टेयर से बढ़कर 2020-21 में 1,04,817 हेक्टेयर हो गई।

इन आंकड़ों से यह स्पष्ट है कि बड़ी मात्रा में कृषि योग्य भूमि विभिन्न कारणों से निष्क्रिय पड़ी है- जैसे सिंचाई की कमी, वर्षा की अस्थिरता, खेती की बढ़ती लागत और किसानों की सीमित वित्तीय क्षमता।

शुद्ध बोया गया क्षेत्र, जो सीधे तौर पर कृषि सक्रियता को दर्शाता है, 2010-11 में 6,99,335 हेक्टेयर था, जो 2015-16 में घटकर 6,49,042 हेक्टेयर हो गया। हालाँकि 2020-21 में इसमें कुछ सुधार के साथ यह क्षेत्र 6,61,932 हेक्टेयर तक पहुँच गया, परंतु यह अभी भी पूर्व स्तर से कम है।

इन तथ्यों से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जिले की कृषि भूमि पर दबाव बढ़ा है और भूमि उपयोग में असंतुलन उत्पन्न हुआ है। परती और बंजर भूमि में कमी लाकर तथा कृषि योग्य भूमि के संरक्षण व पुनरुद्धार के माध्यम से इस असंतुलन को संतुलित किया जा सकता है। इसके लिए सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली, भूमि सुधार कार्यक्रम, और तकनीकी सहायता जैसी पहलें अनिवार्य होंगी।

### **परती भूमि**

परती भूमि वह कृषि योग्य भूमि होती है, जिसे किसी कारणवश अस्थायी रूप से कृषि उत्पादन से बाहर रखा जाता है। यह भूमि कभी-कभी एक मौसम के लिए तो कभी कई वर्षों तक खाली पड़ी रह सकती है। परती भूमि को दो श्रेणियों में विभाजित किया जाता है- वर्तमान परती भूमि (जो एक वर्ष के लिए खाली छोड़ी जाती है) और अन्य परती भूमि (जो एक से पाँच वर्षों तक उपयोग में नहीं ली गई हो)। जालौर जिले में परती भूमि की स्थिति में समय के साथ काफी उतार-चढ़ाव देखे गए हैं, जो जिले की कृषि व्यवस्था पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालते हैं।

वर्ष 2010-11 में जिले की कुल परती भूमि 1,30,801 हेक्टेयर थी, जो 2015-16 में बढ़कर 1,92,561 हेक्टेयर तक पहुँच गई। हालाँकि 2020-21 में इसमें कुछ गिरावट आई और यह 1,80,001 हेक्टेयर रह गई। यह गिरावट सकारात्मक संकेत है, लेकिन यह भी दर्शाता है कि परती भूमि की मात्रा अब भी अत्यधिक है। वर्तमान परती भूमि में 2010-11 से 2015-16 के बीच तीव्र वृद्धि देखी गई- 58,281 हेक्टेयर से 91,885 हेक्टेयर तक। हालाँकि 2020-21 में यह घटकर 75,184 हेक्टेयर हो गई, परंतु यह संख्या अभी भी चिंताजनक बनी हुई है। अन्य परती भूमि, जो अपेक्षाकृत दीर्घकाल तक खाली रही, 2010-11 में 72,520 हेक्टेयर थी, जो 2020-21 में बढ़कर 1,04,817 हेक्टेयर हो गई। यह वृद्धि दर्शाती है कि जिले में बड़ी मात्रा में कृषि भूमि निरंतर

उत्पादन से बाहर रही है, जो कृषि अर्थव्यवस्था के लिए नकारात्मक संकेत है।

परती भूमि में हो रही इस वृद्धि के पीछे कई संभावित कारण हो सकते हैं, जैसे सिंचाई की असमान उपलब्धता, वर्षा की अनिश्चितता, भूमि की उर्वरता में गिरावट, कीट और रोग नियंत्रण की चुनौतियाँ, कृषि में निवेश की सीमित क्षमता, तथा किसानों का परिश्रम और मुनाफे के बीच असंतुलन।

इस समस्या से निपटने के लिए आवश्यक है कि जिले में परती भूमि के पुनर्वास हेतु योजनाबद्ध प्रयास किए जाएँ। सूक्ष्म सिंचाई पद्धतियाँ (जैसे ड्रिप एवं स्प्रिंकलर), मृदा सुधार तकनीक, फसल चक्र अपनाना, और किसानों को वित्तीय एवं तकनीकी सहायता प्रदान करना प्रमुख उपाय हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं जैसे 'परती भूमि विकास कार्यक्रम' का प्रभावी क्रियान्वयन भी इस दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

### **3. फसल संरचना**

फसल संरचना की वृद्धि से जालौर जिले में खरीफ ऋतु में बाजरा, ज्वार, मूँगफली, तिल और ग्वार जैसी फसलें प्रमुख हैं, जबकि रबी ऋतु में गेहूं, चना, सरसों और मेथी की खेती की जाती है। इन फसलों का चयन जलवायु, जल स्रोत, भूमि की प्रकृति तथा बाजार मांग जैसे कारकों पर निर्भर करता है। बीते दो दशकों में किसानों ने परंपरागत खेती के साथ-साथ आधुनिक तकनीकों को भी अपनाया है। ट्रैक्टर, थ्रेशर, उत्तर बीज और सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियाँ (जैसे ड्रिप और स्प्रिंकलर) अब जिले की कृषि प्रणाली का हिस्सा बनती जा रही हैं। पिछले दो दशकों में कृषि क्षेत्र में फसल संरचना में अनेक परिवर्तन देखें जाएं हैं। कुछ फसलों का क्षेत्रफल और उत्पादकता बढ़ी है, जबकि कई पारंपरिक फसलें सीमित या लुप्तप्राय होती जा रही हैं।

### **खाद्यान्न फसलें**

खाद्यान्न फसलें, जैसे बाजरा, गेहूं, जौ और ज्वार, जालौर जिले की पारंपरिक कृषि संरचना का अभिन्न हिस्सा रही हैं। ये फसलें न केवल स्थानीय खाद्य आवश्यकताओं को पूरा करती हैं, बल्कि जिले की कृषि अर्थव्यवस्था का आधार भी बनाती हैं। परंतु पिछले दो दशकों में इन फसलों की क्षेत्रीय स्थिति, उत्पादन और उत्पादकता में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे गए हैं, जो जिले की जलवायु, सिंचाई सुविधा और तकनीकी हस्तक्षेप से गहरे रूप से प्रभावित रहे हैं।

**तालिका 2:** जालौर जिले में खाद्यान्न फसलों के अंतर्गत बोया गया क्षेत्र, उत्पादन एवं उत्पादकता

वर्ष	क्षेत्र (हेक्टेयर)	उत्पादन (टन)	उत्पादकता (टन / हेक्टेयर)
		बाजरा	
2001 - 2002	366,428.00	205,234.00	0.56
2005 - 2006	352,473.00	152,781.00	0.43
2010 - 2011	366,636.00	364,089.00	0.99
2015 - 2016	292,167.00	103,423.00	0.35
2021 - 2022	373,752.00	118,492.00	0.32
जौ			
2001 - 2002	239	615	2.57
2005 - 2006	408	927	2.27

2010 - 2011	520	1,482.00	2.85
2015 - 2016	428	1,281.00	2.99
2021 - 2022	126	447	3.55
<b>ज्वार</b>			
2001 - 2002	4,751.00	1,966.00	0.41
2005 - 2006	4,452.00	1,277.00	0.29
2010 - 2011	5,956.00	4,048.00	0.68
2015 - 2016	8,563.00	2,521.00	0.29
2021 - 2022	3,495.00	362	0.1
<b>गेहूं</b>			
2001 - 2002	28,665.00	37,235.00	1.3
2005 - 2006	22,327.00	32,653.00	1.46
2010 - 2011	44,957.00	80,464.00	1.79
2015 - 2016	41,041.00	82,562.00	2.01
2021 - 2022	34,484.00	83,615.00	2.42

स्रोत: [https://aps.dac.gov.in/APY/Public\\_Report1.aspx](https://aps.dac.gov.in/APY/Public_Report1.aspx)

बाजरा, जो कि जिले की सबसे व्यापक रूप से बोर्ड जाने वाली फसल है, का क्षेत्रफल वर्ष 2001-02 में 3,66,428 हेक्टेयर था, जो 2021-22 में बढ़कर 3,73,752 हेक्टेयर हो गया। यह मामूली वृद्धि सकारात्मक प्रतीत होती है, परंतु इसके बावजूद बाजरे का उत्पादन 2,05,234 टन से घटकर 1,18,492 टन रह गया। इसके साथ ही, उत्पादकता में भी गिरावट दर्ज की गई- 0.56 टन/हेक्टेयर से घटकर मात्र 0.32 टन/हेक्टेयर। यह दर्शाता है कि जलवायु अनुकूलता और मिट्टी की उर्वरता में गिरावट जैसे कारकों ने बाजरे की उत्पादकता को प्रभावित किया है।

इसके विपरीत, गेहूं की स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर रही है। वर्ष 2001-02 में गेहूं का क्षेत्रफल 28,665 हेक्टेयर था, जो 2021-22 में 34,484 हेक्टेयर हो गया। इसी अवधि में गेहूं का उत्पादन 37,235 टन से बढ़कर 83,615 टन तक पहुँच गया। विशेष बात यह रही कि गेहूं की उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार हुआ-1.3 टन/हेक्टेयर से बढ़कर 2.42 टन/हेक्टेयर। यह दर्शाता है कि सिंचित क्षेत्र में गेहूं की पैदावार अच्छी रही और उन्नत बीजों तथा वैज्ञानिक खेती पद्धतियों के कारण इसकी उत्पादकता में निरंतर वृद्धि संभव हो सकी।

जौ की खेती का क्षेत्रफल अपेक्षाकृत सीमित है। वर्ष 2001-02 में यह 239 हेक्टेयर था, जो 2021-22 में घटकर 126 हेक्टेयर रह गया। हालाँकि उत्पादन में मामूली गिरावट आई, लेकिन उत्पादकता में वृद्धि देखी गई- 2.57 से बढ़कर 3.55 टन/हेक्टेयर। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यद्यपि इसका क्षेत्र घटा है, परंतु जौ की खेती अधिक केंद्रित और वैज्ञानिक पद्धतियों से की जा रही है।

ज्वार की स्थिति सबसे चिंताजनक रही है। इसका क्षेत्रफल 2001-02 में 4,751 हेक्टेयर था, जो 2021-22 में घटकर 3,495 हेक्टेयर रह गया। इसके साथ ही उत्पादन में भारी गिरावट हुई- 1,966 टन से घटकर मात्र 362 टन। उत्पादकता में भी भारी गिरावट दर्ज की गई, जो अब 0.10 टन/हेक्टेयर पर पहुँच चुकी है। इससे यह स्पष्ट है कि

ज्वार अब किसानों के लिए लाभकारी फसल नहीं रही, विशेषकर वर्ष आधारित क्षेत्रों में इसकी संवेदनशीलता के कारण। इन सभी आंकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि खाद्यान्न फसलों में एक मिश्रित प्रवृत्ति देखने को मिलती है- गेहूं में सकारात्मक विकास के संकेत हैं, जबकि बाजरा, ज्वार और जौ जैसी फसलें या तो पिछड़ रही हैं या सीमित होती जा रही हैं। इसका समाधान जल संसाधनों का न्यायपूर्ण उपयोग, उन्नत बीजों की आपूर्ति, फसल चक्र और मल्टीक्रॉपिंग जैसी रणनीतियों में निहित है।

#### दलहन फसलें

दलहन फसलें, जैसे चना, मूँग और मोठ, जालौर जिले की कृषि प्रणाली में विशेष महत्व रखती हैं। ये फसलें न केवल प्रोटीन का सस्ता स्रोत हैं, बल्कि मिट्टी की उर्वरता को भी बनाए रखने में सहायक होती हैं, क्योंकि ये वायुमंडलीय नाइट्रोजन को मिट्टी में स्थिर करती हैं। इन फसलों की खेती मुख्यतः वर्षा पर निर्भर होती है, अतः इनके क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता में समय के साथ उल्लेखनीय उतार-चढ़ाव देखे गए हैं।

चना की खेती में पिछले दो दशकों में अस्थिरता देखी गई है। वर्ष 2001-02 में चने का क्षेत्रफल 3,610 हेक्टेयर था, जो 2010-11 में 7,910 हेक्टेयर तक पहुँच गया। इसके पश्चात 2015-16 में यह घटकर मात्र 1,587 हेक्टेयर रह गया। हालाँकि 2021-22 में क्षेत्रफल फिर से बढ़कर 6,693 हेक्टेयर हो गया, जिससे यह स्पष्ट होता है कि चना एक मौसमी और बाजार-प्रभावित फसल बनी हुई है। उत्पादन में भी इसी प्रकार की प्रवृत्तियाँ रहीं- 2001-02 में 2,738 टन से बढ़कर 2021-22 में 4,000 टन। हालाँकि क्षेत्रफल की तुलना में उत्पादकता में बहुत अधिक वृद्धि नहीं हुई; 0.76 टन/हेक्टेयर से घटकर 0.60 टन/हेक्टेयर तक।

**तालिका 3:** जालौर जिले में दलहन फसलों के अंतर्गत बोया गया क्षेत्र, उत्पादन एवं उत्पादकता

वर्ष	क्षेत्र (हेक्टेयर)	उत्पादन (टन)	उत्पादकता (टन/हेक्टेयर)
<b>चना</b>			
2001 - 2002	3,610.00	2,738.00	0.76
2005 - 2006	623	276	0.44
2010 - 2011	7,910.00	3,290.00	0.42
2015 - 2016	1,587.00	1,183.00	0.75
2021 - 2022	6,693.00	4,000.00	0.6
<b>मूँग</b>			
2001 - 2002	67,790.00	17,800.00	0.26
2005 - 2006	81,595.00	14,943.00	0.18
2010 - 2011	90,384.00	55,768.00	0.62
2015 - 2016	103,300.00	24,092.00	0.23
2021 - 2022	133,621.00	6,867.00	0.05
<b>मोठ</b>			
2001 - 2002	16,048.00	1,698.00	0.11
2005 - 2006	32,071.00	23,408.00	0.73
2010 - 2011	32,897.00	23,372.00	0.71
2015 - 2016	10,942.00	240	0.02
2021 - 2022	573	74	0.13

**स्रोत:** [https://aps.dac.gov.in/APY/Public\\_Report1.aspx](https://aps.dac.gov.in/APY/Public_Report1.aspx)

मूँग की स्थिति और भी विचित्र रही है। 2001-02 में इसका क्षेत्रफल 67,790 हेक्टेयर था, जो 2021-22 में बढ़कर 1,33,621 हेक्टेयर हो गया, यानी लगभग दुगुना। परंतु इसके विपरीत, उत्पादन में भारी गिरावट दर्ज की गई- 2010-11 में जहाँ मूँग का उत्पादन 55,768 टन था, वहाँ 2021-22 में यह घटकर केवल 6,867 टन रह गया। उत्पादकता में आई यह गिरावट अत्यंत गंभीर है, जो 0.62 टन/हेक्टेयर से घटकर मात्र 0.05 टन/हेक्टेयर रह गई। इससे स्पष्ट है कि मूँग की खेती की मात्रा तो बढ़ी है, परंतु गुणवत्ता और स्थायित्व में भारी गिरावट आई है, जो संभवतः वर्षा की असमानता, रोग नियंत्रण की कमी और असंगठित कृषि प्रबंधन का परिणाम है।

मोठ, जो कि एक पारंपरिक और स्थानीय रूप से अनुकूल फसल रही है, उसकी स्थिति सबसे अधिक दयनीय है। वर्ष 2005-06 में इसका क्षेत्रफल 32,071 हेक्टेयर था, जो 2021-22 में घटकर मात्र 573 हेक्टेयर रह गया। इसी प्रकार उत्पादन 23,408 टन से घटकर केवल 74 टन रह गया। उत्पादकता में भी भारी गिरावट देखी गई- 0.73 टन/हेक्टेयर से घटकर 0.13 टन/हेक्टेयर। यह दर्शाता है कि मोठ की खेती अब लगभग समाप्ति की ओर है।

इन आँकड़ों से यह निष्कर्ष निकलता है कि दलहन फसलें जालौर जिले में गंभीर संकट की स्थिति में हैं। जहाँ चना कभी-कभी अच्छा प्रदर्शन करता है, वहाँ मंग और मोठ की स्थिति गिरती जा रही है। दलहनों की खेती की यह गिरावट पोषण सुरक्षा और मिट्टी की गुणवत्ता दोनों के लिए नकारात्मक संकेत है। अतः इन फसलों के संरक्षण हेतु फसल बीमा, गुणवत्तापूर्ण बीज वितरण, वैज्ञानिक प्रशिक्षण, तथा मंडों और मूल्य स्थिरता जैसे उपायों को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

### तिलहन फसलें

तिलहन फसलें जैसे अंडी, मूँगफली, सरसों एवं तिल जालौर जिले की कृषि में आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ये फसलें न केवल खाद्य

तेलों की घरेलू आवश्यकता की पूर्ति करती हैं, बल्कि बाजार मूल्य अधिक होने के कारण किसानों के लिए नकद आय का सशक्त साधन भी हैं। बीते दो दशकों में इन फसलों के अंतर्गत क्षेत्र, उत्पादन तथा उत्पादकता में विभिन्न प्रवृत्तियाँ देखने को मिली हैं, जिनसे जिले की कृषि अर्थव्यवस्था की दिशा का संकेत मिलता है।

अंडी की खेती ने जालौर जिले में अच्छा विस्तार किया है। वर्ष 2001-02 में इसका क्षेत्रफल 19,039 हेक्टेयर था, जो 2010-11 में बढ़कर 67,253 हेक्टेयर हो गया। हालांकि 2021-22 में यह घटकर 43,773 हेक्टेयर रह गया, परंतु यह अब भी एक प्रमुख तिलहन फसल बनी हुई है। उत्पादन के स्तर पर भी वृद्धि देखी गई- 24,080 टन (2001-02) से बढ़कर 79,985 टन (2021-22)। इसकी उत्पादकता 1.26 टन/हेक्टेयर से बढ़कर 1.83 टन/हेक्टेयर हो गई, जो तकनीकी उन्नयन और खेती में नवाचार के कारण संभव हुआ।

मूँगफली की खेती का क्षेत्र बहुत पहले (2001-02) केवल 39 हेक्टेयर तक सीमित था, जो 2021-22 में बढ़कर 31,685 हेक्टेयर हो गया। इसी अवधि में इसका उत्पादन 48 टन से बढ़कर 41,957 टन और उत्पादकता 1.23 से 1.32 टन/हेक्टेयर हो गई। यह दर्शाता है कि मूँगफली अब जिले की तेजी से उभरती हुई तिलहन फसल बन गई है। सरसों/राई, जिले की एक प्रमुख शीतकालीन फसल के रूप में उभरी है। वर्ष 2001-02 में यह 31,994 हेक्टेयर में बोई जाती थी, जिसका उत्पादन 27,344 टन था और उत्पादकता 0.85 टन/हेक्टेयर। 2021-22 में इसका क्षेत्रफल लगभग पाँच गुना होकर 1,72,037 हेक्टेयर हो गया और उत्पादन 2,46,528 टन तक पहुँच गया। उत्पादकता में भी वृद्धि हुई और यह 1.43 टन/हेक्टेयर तक पहुँच गई। यह प्रगति स्पष्ट करती है कि सरसों अब जिले की सबसे प्रमुख तिलहन फसल बन चुकी है।

**तालिका 4:** जालौर जिले में तिलहन फसलों के अंतर्गत बोया गया क्षेत्र, उत्पादन एवं उत्पादकता

वर्ष	क्षेत्र (हेक्टेयर)	उत्पादन (टन)	उत्पादकता (टन/हेक्टेयर)
<b>अंडंगी</b>			
2001 - 2002	19,039.00	24,080.00	1.26
2005 - 2006	43,164.00	6,550.00	0.15
2010 - 2011	67,253.00	133,819.00	1.99
2015 - 2016	70,141.00	132,849.00	1.89
2021 - 2022	43,773.00	79,985.00	1.83
<b>मूगफली</b>			
2001 - 2002	39	48	1.23
2005 - 2006	2,660.00	4,114.00	1.55
2010 - 2011	3,986.00	7,837.00	1.97
2015 - 2016	14,443.00	22,783.00	1.58
2021 - 2022	31,685.00	41,957.00	1.32
<b>सरसों व राई</b>			
2001 - 2002	31,994.00	27,344.00	0.85
2005 - 2006	93,939.00	114,158.00	1.22
2010 - 2011	105,461.00	145,588.00	1.38
2015 - 2016	87,591.00	88,711.00	1.01
2021 - 2022	172,037.00	246,528.00	1.43
<b>तिल</b>			
2001 - 2002	20,709.00	5,320.00	0.26
2005 - 2006	29,360.00	1,275.00	0.04
2010 - 2011	17,368.00	5,622.00	0.32
2015 - 2016	25,078.00	3,658.00	0.15
2021 - 2022	18,709.00	886	0.05

**स्रोत:** [https://aps.dac.gov.in/APY/Public\\_Report1.aspx](https://aps.dac.gov.in/APY/Public_Report1.aspx)

इसके विपरीत, तिल की खेती में गंभीर गिरावट आई है। 2001-02 में इसका क्षेत्रफल 20,709 हेक्टेयर था, जो 2021-22 में घटकर 18,709 हेक्टेयर हो गया। हालांकि यह गिरावट बहुत अधिक नहीं है, परंतु उत्पादन में भारी गिरावट दर्ज की गई — 5,320 टन से घटकर मात्र 886 टन। उत्पादकता भी 0.26 टन/हेक्टेयर से घटकर 0.05 टन/हेक्टेयर रह गई, जो दर्शाता है कि यह फसल अब किसानों के लिए लाभकारी नहीं रह गई है।

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि जिले में तिलहन फसलों का परिवर्षय तेजी से बदल रहा है। जहाँ सरसों और मूगफली की खेती में उल्लेखनीय प्रगति हुई है, वहीं तिल जैसी पारंपरिक फसलें धीरे-धीरे हाशिए पर चली गई हैं। इन परिवर्तनों के पीछे जलवायु, बाजार मांग, समर्थन मूल्य और बीज प्रौद्योगिकी जैसे कारक कार्य कर रहे हैं। जिले में तिलहन उत्पादन को संतुलित और लाभकारी बनाए रखने के लिए किसानों को तकनीकी प्रशिक्षण, मूल्य स्थिरता और बीमा कवरेज जैसी सुविधाएँ प्रदान की जानी चाहिए।

### **व्यावसायिक फसलें**

व्यावसायिक फसलें, जिन्हें नकदी फसलें भी कहा जाता है, मुख्यतः बाजार में बिक्री हेतु उगाई जाती हैं और किसानों को त्वरित एवं सुनिश्चित आय प्रदान करती हैं। जालौर जिले में प्रमुख व्यावसायिक फसलों में कपास, मिर्ची और ग्वार शामिल हैं। पिछले दो दशकों में इन

फसलों के अंतर्गत क्षेत्रफल, उत्पादन और उत्पादकता में उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिले हैं, जो जिले के कृषि व्यवहार में हो रहे संक्रमण की ओर संकेत करते हैं।

कपास, एक पारंपरिक नकदी फसल के रूप में, धीरे-धीरे जिले में पुनः लोकप्रिय हो रही है। वर्ष 2001-02 में कपास का क्षेत्रफल मात्र 489 हेक्टेयर था, जो 2021-22 में बढ़कर 884 हेक्टेयर हो गया। इसी अवधि में कपास का उत्पादन 1,753 टन से बढ़कर 3,952.94 टन तक पहुँच गया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि कपास की उत्पादकता में लगातार सुधार हुआ- 3.58 टन/हेक्टेयर से बढ़कर 4.47 टन/हेक्टेयर। यह सुधार आधुनिक कृषि तकनीकों, उन्नत बीजों तथा सिंचाई सुविधा की उपलब्धता का परिणाम है।

**तालिका 5:** जालौर जिले में व्यावसायिक फसलों के अंतर्गत बोया गया क्षेत्र, उत्पादन एवं उत्पादकता

वर्ष	क्षेत्र (हेक्टेयर)	उत्पादन (टन)	उत्पादकता (टन / हेक्टेयर)
<b>कपास</b>			
2001 - 2002	489	1,753.00	3.58
2005 - 2006	291	541	1.86
2010 - 2011	340	864.36	2.54
2015 - 2016	350	946.68	2.7
2021 - 2022	884	3,952.94	4.47
<b>मिर्ची</b>			
2001 - 2002	641	641	1.00
2005 - 2006	486	1361	2.80
2010 - 2011	372	893	2.40
2015 - 2016	1008	1714	1.70
2021 - 2022	1089	2178	2.00
<b>ग्वार</b>			
2001 - 2002	641	641	1.00
2005 - 2006	486	1361	2.80
2010 - 2011	372	893	2.40
2015 - 2016	1008	1714	1.70
2021 - 2022	1089	2178	2.00

**स्रोत:** [https://aps.dac.gov.in/APY/Public\\_Report1.aspx](https://aps.dac.gov.in/APY/Public_Report1.aspx)

मिर्ची की खेती भी जिले में धीरे-धीरे विस्तार पा रही है। वर्ष 2001-02 में इसका क्षेत्रफल 641 हेक्टेयर था, जो 2021-22 में बढ़कर 1,089 हेक्टेयर हो गया। उत्पादन भी उसी अनुपात में बढ़ा- 641 टन से 2,178 टन तक। उत्पादकता में भी दोगुनी वृद्धि देखी गई- 1.00 से 2.00 टन/हेक्टेयर। मिर्ची जैसी नकदी फसलों में यह वृद्धि दर्शाती है कि अब किसान पारंपरिक अनाज फसलों की बजाय बाज़ार केंद्रित फसलों की ओर बढ़ रहे हैं।

ग्वार, जो कि राजस्थान की एक विशिष्ट फसल है और जिसका उपयोग औद्योगिक गोंद बनाने में होता है, उसकी खेती में भी सकारात्मक प्रवृत्तियाँ देखी गई हैं। वर्ष 2001-02 में इसका क्षेत्रफल 641 हेक्टेयर था, जो 2021-22 में 1,089 हेक्टेयर तक बढ़ गया। उत्पादन भी 641 टन से बढ़कर 2,178 टन तक हो गया और उत्पादकता 1.00 से 2.00 टन/हेक्टेयर हो गई। यह फसल विशेष रूप से निर्यात-उन्मुख है और इसकी बाज़ार मांग स्थिर एवं लाभकारी मानी जाती है।

इन अँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि जिले में व्यावसायिक फसलों का विस्तार एक सकारात्मक संकेतक है, जो कृषि आय में सुधार तथा खेती को लाभकारी बनाने की दिशा में उभरती प्रवृत्तियों को दर्शाता है। इन फसलों की खेती से किसानों को नकदी आय प्राप्त होती है, जो उन्हें कृषि निवेश, धरेलू आवश्यकताओं तथा ऋण चुकौती में सहायक बनती है। हालांकि, इन फसलों के साथ जोखिम भी जुड़ा रहता है- जैसे कीटों का प्रकोप, मूल्य अस्थिरता, और भंडारण की सीमाएँ।

#### **4. निष्कर्ष**

जालौर जिले में भूमि उपयोग और फसल संरचना के दो दशकों के विस्तृत विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि जिले की कृषि प्रणाली में विविधतापूर्ण परिवर्तन हुए हैं। भूमि उपयोग प्रतिरूप में परती और बंजर भूमि का विस्तार, शुद्ध बोया क्षेत्र में गिरावट, तथा गैर-कृषि भूमि की वृद्धि जैसे संकेत कृषि पर पड़ रहे दबाव को दर्शाते हैं। दूसरी ओर, कुछ फसलों में उत्पादकता और उत्पादन का बढ़ना सकारात्मक संकेत देता है कि किसान नवाचार और तकनीक को अपनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

खाद्यान्न फसलों में गेहूं की स्थिति सुवृद्ध रही है, जबकि बाजरा, ज्वार और जौ जैसी पारंपरिक फसलें गिरावट की ओर हैं। दलहन फसलों में चना कुछ हद तक स्थिर रहा, परंतु मूंग और मोठ की स्थिति अत्यंत चिंताजनक है। तिलहन फसलों में सरसों और मूंगफली की उन्नति स्पष्ट दिखाई देती है, जबकि तिल की स्थिति गिरावट में है। व्यावसायिक फसलों विशेष रूप से कपास, मिर्च और ग्वार ने अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि किसान अब बाजारोन्मुख खेती की ओर बढ़ रहे हैं।

यह अध्ययन दर्शाता है कि जलवायु संतोषीकरण और संसाधनों की उपलब्धता, तकनीकी ज्ञान, और सरकारी नीतियाँ जिले की कृषि संरचना को गहराई से प्रभावित करती हैं। यदि इन क्षेत्रों में समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए, तो कृषि की स्थिरता और खाद्य सुरक्षा दोनों पर संकट उत्पन्न हो सकता है।

#### **5. सुझाव**

जालौर जिले की कृषि व्यवस्था को स्थिर, समावेशी और लाभकारी बनाने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं:

सबसे पहले, परती भूमि के पुनरुद्धर तथा विशेष योजना बनाई जानी चाहिए, जिसमें जल संरक्षण, जैविक सुधार और भूमि स्तर सुधार जैसी तकनीकों को बढ़ावा मिले। सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली जैसे ड्रिप और स्प्रिंकलर तकनीक का व्यापक प्रचार-प्रसार कर जल संकट को कम किया जा सकता है।

दूसरे, पारंपरिक फसलों- जैसे बाजरा, मोठ, तिल की खेती को पुनः प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। इसके लिए बीज सब्सिडी, समर्थन मूल्य और फसल बीमा जैसी योजनाएँ सशक्त रूप से लागू होनी चाहिए।

तीसरे, किसानों को तकनीकी प्रशिक्षण एवं सलाह समय-समय पर दी जाए। इसमें उन्नत बीज, फसल चक्र, कीट प्रबंधन, जैविक खेती आदि शामिल हों, ताकि वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खेती करें।

चौथे, बाजार पहुँच और मूल्य स्थिरता की व्यवस्था की जाए। किसानों को मंडियों तक सीधा पहुँच, मूल्य जानकारी और संगठित विपणन प्रणाली से जोड़ा जाना चाहिए।

अंततः नीति-निर्माण में स्थानीय परिस्थितियों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। जालौर जैसे शुष्क और अर्ध-शुष्क जिले की भौगोलिक एवं सामाजिक विशेषताओं के अनुरूप योजनाएँ और संसाधन उपलब्ध कराना आवश्यक है।

#### **6. संदर्भ**

- कृषि एवं किसान कल्याण विभाग. (2022). भूमि उपयोग सांख्यिकी रिपोर्ट. भारत सरकार. <https://aps.dac.gov.in/LUS/Public/Reports.aspx>
- कृषि एवं किसान कल्याण विभाग. (2022). प्रमुख फसलों का क्षेत्रफल, उत्पादन एवं उत्पादकता (APY रिपोर्ट). भारत सरकार. [https://aps.dac.gov.in/APY/Public\\_Report1.aspx](https://aps.dac.gov.in/APY/Public_Report1.aspx)
- आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय. (2020). जालौर जिला सांख्यिकी विवरणिका. राजस्थान सरकार.
- कृषि विभाग, राजस्थान सरकार. (2021). जालौर जिले की कृषि रिपोर्ट (2010–2020). कृषि सांख्यिकी प्रभाग, जयपुर.
- ग्रामीण विकास मंत्रालय. (2021). परती भूमि विकास कार्यक्रम पर रिपोर्ट. भारत सरकार.
- भारतीय मौसम विज्ञान विभाग. (बिना तिथि). राजस्थान की जलवायु रिपोर्ट. <https://mausam.imd.gov.in/>
- वैद्यनाथन, ए. (2006). भारत में कृषि वृद्धि: प्रौद्योगिकी, प्रोत्साहन और संस्थानों की भूमिका. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
- सिंह, आर. बी. (2015). भारतीय कृषि का रूपांतरण: नीति, प्रदर्शन और सततता. हैदराबाद: आईसीएआर-राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रबंधन अकादमी.
- देसाई, आर. जी., एवं पटेल, एच. आर. (2019). पश्चिम भारत में फसल प्रतिरूप परिवर्तन और कृषि प्रदर्शन: जिला-स्तरीय विश्लेषण. भारतीय कृषि अर्थशास्त्र जर्नल, 74(3), 355–370.
- कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय. (2021). भारत में कृषि की स्थिति: रिपोर्ट 2020–21. भारत सरकार, नई दिल्ली.
- शर्मा, आर. के. (2020). राजस्थान में शुष्क भूमि कृषि पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव. भारतीय शुष्क भूमि कृषि अनुसंधान एवं विकास पत्रिका, 35(2), 45–52.

#### **Creative Commons (CC) License**

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

**CONFERENCE ORGANIZERS**

- Desert Research Association (DRA), Headquarters – Jodhpur
- Nehru Study Centre, Jai Narain Vyas University, Jodhpur
- Government Girls College, Jhalamand (Jodhpur)
- Department of Geography, Dr. Bhim Rao Ambedkar Government College, Sri Ganganagar

In Collaboration with Kalinga University, Raipur (Chhattisgarh)

**Disclaimer:** The views, opinions, statements, and conclusions expressed in the papers, abstracts, presentations, and other scholarly contributions included in this conference are solely those of the respective authors. The organisers and publisher shall not be held responsible for any loss, harm, damage, or consequences — direct or indirect — arising from the use, application, or interpretation of any information, data, or findings published or presented in this conference. All responsibility for the originality, authenticity, ethical compliance, and correctness of the content lies entirely with the respective authors.